धन का विशेषाधिकार

लेखक - अजीम प्रेमजी (संस्थापक अध्यक्ष विप्रो लिमिटेड)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-IV (नीति शास्त्र) से संबंधित है।

द हिन्दू

11 अक्टूबर, 2019

"अमीरों को ट्रस्टियों (संरक्षकों) के रूप में बदलने का महात्मा गाँधी का विचार प्रभावी और स्थायी अंतर ला सकता है।"

यह महात्मा गाँधी ही थे, जिन्होंने मेरी माँ के बाद, मेरी सोच और कार्यों को सबसे अधिक प्रभावित किया है कि मुझे अपने धन के विशेषाधिकार के साथ क्या करना चाहिए। मेरी माँ विकलांग बच्चों के लिए एक धर्मार्थ ऑर्थोपेडिक अस्पताल के संस्थापक सदस्यों में से एक थीं - जो आजादी के बाद देश में पहली थी - जिसे उन्होंने कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में 50 वर्षों तक चलाया। मैंने अपने बचपन से देखा है कि इसे संभव बनाने के लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है और इससे लोगों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है।

महात्मा गाँधी का यह विचार कि धनी लोगों को लोगों की भलाई के लिए अपने धन का ट्रस्टी होना चाहिए, मुझे तब तक समझ में नहीं आया, जब तक मैं एक धनी व्यक्ति नहीं बन गया। उसे उद्धृत करने के लिए, ऐसा मान लेते हैं कि मेरे पास बहुत धन है जो या तो विरासत के माध्यम से आया है या व्यापार और उद्योग के माध्यम से आया है, लेकिन मुझे पता होना चाहिए कि यह सब धन मेरा नहीं है; जो मेरा है, वह सम्मानजनक आजीविका का अधिकार है। मेरी संपत्ति का बाकी हिस्सा समुदाय का है और इसका इस्तेमाल समुदाय के कल्याण के लिए ही किया जाना चाहिए।"

ट्रस्टीशिप के विचार में कई गाँधीवादी विचार और सोच अंतर्निहित हैं। पहली वास्तविकता समझ यह होनी चाहिए कि धन की भारी असमानताएं, अस्वीकार्य हैं, लेकिन अवैध नहीं हैं। यह एक सकारात्मक दृष्टिकोण है। यह कुछ अन्य आर्थिक विचारधाराओं के विपरीत, यह धन पर अधिकार के लिए लोगों को कठघरे में खड़ा नहीं करता है।

दूसरा, यह स्पष्ट और निश्चित है कि धन और संसाधन, चाहे जो भी इनका मालिक हो, इन्हें समाज और इसके सभी लोगों की बेहतरी के लिए मदद् करनी चाहिए। तीसरा, यह ऐसा करने का श्रेय उन लोगों पर डालता है जिनके पास धन है। यह अहिंसा के उनके दर्शन का प्रत्यक्ष प्रकटीकरण है अर्थात् धनवानों को इसे अपने हिसाब से करना होगा, बिना किसी बाहरी दबाव के। चौथा, यह मानव प्रकृति में विश्वास रखता है कि अंततः लोग सही काम करेंगे, यदि आप उन पर भरोसा करते हैं।

अप्रत्याशित रूप से, कई लोग एक समतावादी समाज के निर्माण के लिए इस दृष्टिकोण की प्रभावशीलता पर संदेह करेंगे और वह अच्छे कारण के लिए होगा। लेकिन मेरा मानना है कि लंबे समय तक, जिस दुनिया में हम रहते हैं, उसकी वास्तविकता में, यह दृष्टिकोण अधिक स्थायी रूप से प्रभावी होगा।

ट्रस्टीशिप के विचार के अलावा, मुझे लगता है कि व्यापार और उद्योग के अग्रणी लोग महात्मा गाँधी के जीवन

से बहुत कुछ सीख सकते हैं। आईए हम सिर्फ एक पहलू पर नजर डालते हैं, जिसे मैं 'नैतिक नेतृत्व' कहूंगा। यह कैसे संभव है कि गाँधी ने लाखों लोगों को पहल करने के लिए अपने विचारों से प्रभावित कर लिया, जबकि उनके पास कोई औपचारिक शक्ति नहीं थी? इसका उत्तर महात्मा गाँधी के नैतिक नेतृत्व में निहित है, जिसे लाखों लोगों ने अपनाया था, जिसके लिए उन्हें किसी विशेष शक्ति की की आवश्यकता नहीं थी। यह नैतिक नेतृत्व उनके व्यवहार के तीन परस्पर संबंधित पहलुओं का परिणाम था।

पहला, सत्य का उनका अथक और अडिग विचार, जिसका वे हर हाल में पालन करते थे। वे कभी सत्य के पालन करने से डरे नहीं। सच्चाई के नए पहलुओं की खोज की जिसने उनकी पिछली मान्यताओं को चुनौती दी, लेकिन वह कभी भी अपना दिमाग बदलने के लिए तैयार नहीं हुए और सार्वजनिक रूप से सीखने की इस यात्रा को साझा करने का साहस रखते थे।

दूसरा, उन्होंने हमेशा से अहिंसा पर जोर दिया। हमने उनके जीवन के माध्यम से बार-बार यह देखा है, कि 'पूर्ण स्वराज' महात्मा गाँधी के अहिंसा के प्रति अटल विश्वास के साथ मेल नहीं खा सका। चौरा-चौरी की घटना के बाद असहयोग आंदोलन को स्थगित करना भी शायद इससे संबंधित और विवादास्पद रहा है। हालाँकि, इसने उनके दृष्टिकोण के महत्व, नैतिकता के महत्व और सही काम को सही तरीके से करने की सार्वजनिक समझ को हमेशा के लिए मजबूत कर दिया।

तीसरा, उनकी सहज सहानुभूति और मानवता थी। कमजोर और गरीबों के प्रति उनकी भक्ति को हम सब ने भली-भांति देखा है। भारत को एकजुट करने की उनकी कोशिश उनकी तीन महान खोजों में से एक थी। लेकिन उनकी सबसे बड़ी खूबी खराब समय और परिस्थिति में भी डटे रहने की थी। इन सब के मूल में सभी के प्रति उनकी सहानुभूति थी, जो न केवल सभी साथी मनुष्यों के लिए थी, बल्कि जानवरों और प्रकृति के लिए भी थी।

लोगों ने उन्हें एक प्रकाशस्तंभ, एक आदर्श और एक नेता के रूप में देखा है, जिन्हें देखकर लोग उनके व्यक्तित्व का पालन करने के लिए प्रेरित होते थे। हममें से जो नेतृत्व की भूमिकाओं में हैं, उन्हें यह मालूम होना चाहिए कि शक्ति समय के साथ नष्ट हो जाती है, जबकि नैतिक नेतृत्व हमेशा कायम रहती है।

कालातीत सत्य के कुछ शब्द हैं जिनकी शक्ति केवल हर बार दोहराए जाने के कारण बढ़ती है क्योंकि वे नैतिक नेतृत्व से संबंधित हैं। जब भी आप संदेह में हों, तो निम्नलिखित परीक्षण लागू करें। सबसे गरीब और सबसे कमजोर पुरुष या महिला का चेहरा याद करें, जिसे आपने देखा होगा और अपने आप से पूछें कि क्या आपके द्वारा उठाये जाने वाला कदम क्या इनके किसी काम आएगा। क्या उन्हें इससे कुछ हासिल होगा या नहीं? दूसरे शब्दों में, क्या यह भूखे और आध्यात्मिक रूप से भूखे लाखों लोगों के लिए स्वराज लाएगा? तब आपको निश्चित रूप से अपने संदेह का उत्तर मिल जाएगा।"

GS World Committed to Excellence

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. **गाँधी जी के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?**

(a) बिहार की नील सत्याग्रह, डाण्डी यात्रा, खेड़ा का किसान सत्याग्रह गाँधी जी के प्रमुख सत्याग्रह हैं।

(b) सन् 1931 में इग्लैंड में संपन्न गोलमेज सम्मेलन में गाँधी जी ने भाग लिया था।

(c) गाँधी को महात्मा के नाम से सबसे पहले 1916 में गोपाल कृष्ण गोखले ने संबोधित किया था।

(d) प्रति वर्ष 2 अक्टूबर को उनका जन्म दिन पूरे विश्व में अंतर्राष्ट्रीय अंहिसा दिवस के नाम से मनाया जाता है।

Expected Questions (Prelims Exams)

1. **Which of the following statements regarding Gandhiji is incorrect?**

(a) Indigo Satyagraha of Bihar, Dandi Yatra, Farmer Satyagraha of Kheda are the main Satyagraha of Gandhiji.

(b) In 1931, Gandhiji participated in the Round Table Conference held in England.

(c) Gandhi was first addressed by Gopal Krishna Gokhale in 1916 as Mahatma.

(d) Every year on October 2, his birthday is celebrated as International Anahisa Day all over the world.

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: क्या गांधी जी का ट्रस्टीशिप का सिद्धांत आज के वर्तमान पूंजीवादी परिवेश में अपनाया जा सकता है? क्या कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व इस दिशा में एक कदम माना जाना चाहिए? चर्चा कीजिए।

(250 शब्द)

Can Gandhiji's principle of trusteeship be adopted in today's capitalist environment? should corporate social responsibility be considered as a step in this direction?

(250 Words)

नोट : 10 अक्टूबर को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1 (b) होगा।

Comm.